प्राक्कथन

एम्. ए. की परीक्षा होने के बाद अवकाश के दरम्यान आदत के अनुसार मैं अनेक उपन्यासों की ओर आकर्षित हुआ । अनेक नए उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित आधुनिकतावाद को बढ़ावा देनेवाली बदलती समाजनीतियों का सूक्ष्म चित्रण पढ़कर मैं प्रभावित होता था। उस समय मेरा मन-मस्तिष्क पुनः-पुनः विचार कर रहा था- आज के वर्तमान समाज का इतिहास किन-किन पड़ावों से गुजरकर आज के वर्तमान तक पहुँचा है। काल की सदैव प्रवाहमान गंगा अपने साथ कौन से तत्त्व लेकर आई है और कौन से तत्त्व पीछे छोड़ दिए हैं। अतीत में बोए हुए बीज आज लहराते हुए घने पेड़ बन गए हैं, लेकिन नई पीढ़ी उन पेड़ों को आधुनिकता के नाम पर कितनी निर्घृनता से काँट रही है। इस तरह के चित्रण को पढ़कर मन बेचैन होता था।

जब एम्. फिल के लिए शोध-विषय चयन का सिलसिला शुरू हुआ तब मैंने अपने लिए उपलब्धि सिद्ध हुए पूजनीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया। आपने मेरी रुचि देखकर अनेक सशक्त उपन्यासकारों के नाम सुझाए । साथ ही अब तक जिनके उपन्यास साहित्य पर कहीं शोध-कार्य नहीं हुआ है, ऐसे हिंदी के सशक्त रचनाकार असगर वजाहत का नाम बताया। आपने मुझे असगर वजाहत जी की युग और समाज के प्रति व्यापक रचना-दृष्टि बताई। तब मुझे लगा कि जो आदमी समाज और युग के प्रति सजग है वही समाज की सही संवेदनाओं को लिख सकता है। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श के पश्चात् लघु शोध-प्रबंध के लिए ''असगर वजाहत के उपन्यास : बदलते मानव जीवन की मीमांसा'' विषय का चयन हुआ।

महत्त्वपूर्ण निर्देशन / स्पष्टीकरण -

यहाँ पर एक बात का निर्देशन या स्पष्टीकरण देना आवश्यक समझता हूँ कि असगर वजाहत के तीन उपन्यासों के नामों की चर्चा मैंने सुनी थी, किंतु जब मैं प्रत्यक्ष अध्ययन में जुट गया तब पाया कि 'सात आसमान', 'रात में जागनेवाले' और 'पहर-दोपहर' इन तीन उपन्यासों में से अंतिम दो उपन्यास अप्राप्य हैं। 'पहर-दोपहर' छह-सात साल पहले 'इंडिया टुडे'

पत्रिका में धारावाहिक रूप में आया था और प्रयास करने पर भी 'इंडिया टुडे' का न अंक उपलब्ध होता है और न यह पुस्तक के रूप में छापा हुआ मिलता है।

'रात में जागनेवाले' उपन्यास 'कथादेश' पत्रिका में छपा था लेकिन न वह पत्रिका का अंक उपलब्ध है और न वह पुस्तकाकार रूप में छप गया है। लेखक से संपर्क करने पर भी इसी बात की पुष्टि हुई है। बच जाता है 'सात आसमान' उपन्यास। यह वह रचना है जो असगर वजाहत के प्रकाशित साहित्य में तो श्रेष्ठ कोटि की है ही लेकिन हिंदी उपन्यास की विकास यात्रा में उच्च कोटि की औपन्यासिक रचना कहनी होगी। जिस तरह प्रेमचंद का समग्र साहित्य-संसार श्रेष्ठ है ही लेकिन 'गोदान' के साथ प्रेमचंद का नाम जुड़ा हुआ है उसी तरह 'सात आसमान' उपन्यास के साथ असगर वजाहत का नाम जुड़ा हुआ दिखाई देता है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक ''असगर वजाहत के उपन्यास : बदलते मानव जीवन की मीमांसा'' है किंतु यह लघु शोध-प्रबंध असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास पर ही केंद्रित है। उपर्युक्त स्थिति को विद्वतजनों के लिए स्पष्ट कर देना मुझे आवश्यक लगता था। इसलिए यह अनुच्छेद यहाँ दर्ज किया है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उजागर हुए थे -

1. असगर वजाहत का जीवन और व्यक्तित्व कैसा रहा है ?
2. क्या असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में बदलते मानव का संपूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है ?
3. असगर वजाहत के उपन्यास में बदलते मानव जीवन के किन पहलुओं का चित्रण किया गया है ?
4. क्या असगर वजाहत के उपन्यास में वर्तमान समाज के यथार्थ का चित्रण हुआ है ?
5. असगर वजाहत के उपन्यास में बदलते मानव जीवन की कौन-कौन-सी विशेषताएँ चित्रित हुई हैं ?
6. असगर वजाहत का उपन्यास समाजहित या उपयोगिता की दृष्टि से कहाँ तक सफल सिद्ध हुआ है ?
7. असगर वजाहत के उपन्यास का प्रतिपाद्य क्या है ?

'सात आसमान' उपन्यास के अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है। लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति को ध्यान में रखकर मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है -

प्रथम अध्याय का शीर्षक है- ''असगर वजाहत : व्यक्ति एवं वाङ्मय''। इस अध्याय के अंतर्गत असगर वजाहत जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को तलाशने का प्रयास किया है। उनके व्यक्तित्व के संक्षिप्त परिचय में उनकी जन्म-तिथि तथा जन्म स्थान, माता-पिता, बचपन, परिवार, शिक्षा, नौकरी, नाटक क्षेत्र, दूरदर्शन क्षेत्र तथा जनसंचार माध्यम में उनका स्थान आदि बातों का विवेचन किया है। साथ-साथ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की विशेषताओं जैसे- प्रतिभासंपन्न, आधुनिक-वैज्ञानिक दृष्टि, युवाओं के प्रेरणा स्रोत, देशप्रेमी, सांप्रदायिक एकता के हिमायती, मुस्लिमों के व्यथाकार आदि का परिचय दिया है। उनके कृतित्व में उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना पुस्तक, अनुवाद कार्य, समीक्षा के साथ-साथ दूरदर्शन धारावाहिक कार्यक्रमों तथा फिचर फिल्मों के लिए लिखे गए पटकथा लेखन की नामावली भी दी है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है- ''असगर वजाहत के 'सात आसमान' का औपन्यासिक शिल्प''। इस अध्याय के प्रारंभ में उपन्यास का स्वरूप, शिल्प, औपन्यासिक शिल्प से तात्पर्य आदि सैद्धांतिक बातों का संक्षेप में परिचय दिया है। शिल्पगत अध्ययन में शीर्षक, कथावस्तु, कथावस्तु की समीक्षा, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा, शैली और उद्देश्य आदि बातों का उपन्यास की सफलता को दृष्टि में रखते हुए विवेचन किया है। उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण के लिए प्रमुख पात्र, सहायक पात्र और गौण पात्र के रूप में विभाजन कर विवेचन किया है। भाषा-शिल्प में हिंदी-उर्दू का संमिश्र प्रयोग, भोजपुरी बोली का प्रयोग, बंबइयाँ हिंदी का प्रयोग, बोलचाल की भाषा का प्रयोग, अवधी भाषा का प्रयोग, पहेलियाँ-मुखरियाँ, गालियों से युक्त भाषा के प्रयोग के साथ-साथ उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत शब्दों के प्रयोग की संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है- ''असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास : बदलते मानव का सामाजिक जीवन'' । इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यास में चित्रित सामाजिक जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। सामाजिक जीवन के विविध पक्षों में निहित बदलते समाज की धर्म-व्यवस्था, वर्ग-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, शिक्षा-व्यवस्था से संबंधित विभिन्न पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। साथ-साथ बदलते पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, बूढ़े, युवा-वर्ग, नौकर, पागल आदि की स्थिति का विवेचन किया है। तद्उपरांत स्वातंत्र्योत्तरकालीन बदलते समाज की अनेक विशेषताओं को विवेचित किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है- ''असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास : बदलते मानव का राजनीतिक जीवन'' । इस अध्याय को मुगलकालीन राजनीतिक जीवन, अंग्रेजकालीन राजनीतिक जीवन और स्वाधीनता प्राप्त भारतीय मानव का राजनीतिक जीवन जैसे तीन विभागों में विभाजित किया है। मुगलकालीन राजनीतिक जीवन में मुगलों का भारतीय राजनीति में प्रवेश, मुगलकालीन राजनीति और धर्म, शासन-व्यवस्था और कूटनीति तथा मुगलकालीन राजनीति में स्त्रियों का सहभाग आदि का विवेचन किया है। अंग्रेजकालीन राजनीतिक जीवन में विभिन्न आंदोलनों पर प्रकाश डाला है। स्वाधीनता प्राप्त भारतीय राजनीतिक जीवन में जमींदारी उन्मूलन, काँग्रेस नीति आदि घटनाओं के साथ-साथ राजनीति की यथार्थ स्थिति का भी विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है- ''असगर वजाहत का 'सात आसमान' उपन्यास : बदलते मानव का सांस्कृतिक जीवन'' । इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यास में चित्रित सांस्कृतिक जीवन के विविध अंगों का विवेचन-विश्लेषण करते समय रीति-रिवाज और परंपराएँ उत्सव एवं त्यौहार, रहन-सहन, खान-पान, वस्त्रालंकार, उपासना, अंधविश्वास आदि का विवेचन किया है। तद्-उपरांत इस अध्याय को दो विभागों में विभाजित किया है- बदलते मानव का सांस्कृतिक जीवन : विकासजन्य स्थिति और बदलते मानव का सांस्कृतिक जीवन : ह्रासजन्य स्थिति। विकासजन्य स्थिति में संस्कृति के विकास के लिए जो बातें आधार सिद्ध हुई हैं, उनका

विवेचन किया है तो ह्रासजन्य स्थिति में जो बातें भारतीय संस्कृति के लिए घातक सिद्ध हुई उन्हें विवेचित किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के उपलब्ध तथ्यों को आधार मानकर निकाले गए निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। तद्उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में चित्रित बदलते मानव जीवन को अध्ययन का केंद्रबिंदु बनाकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में असगर वजाहत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में चित्रित बदलते मानव जीवन के विविध पहलुओं की तलाश की है।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन का सूक्ष्मता एवं गहराई से अनुशीलन करते हुए उनकी यथार्थ स्थिति और भविष्य की आवश्यकताओं को बारीकी से व्याख्यायित किया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति जिन लोगों की प्रेरणा तथा सहायता से हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध शोध क्षेत्र के मर्मज्ञ, प्रसिद्ध समीक्षक श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, प्रपाठक, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अपार पांडित्य तथा कुशल निर्देशन का फल है। आपने सतत प्रेरणा, परामर्श एवं प्रोत्साहन देकर मेरे साहित्यिक संस्कारों के गठन में विशेष योग दिया है। मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति सदैव अनुग्रहित रहूँगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि भविष्य में भी आपके आशीर्वाद एवं शिष्यवत्सल भाव से मेरा जीवनपथ हमेशा आलोकित होता रहे।

मैंने जिस विषय पर अनुसंधान कार्य किया है, उस औपन्यासिक कृति के रचनाकार असगर वजाहत जी ने अपनी व्यस्तताओं में भी मुझे यथायोग्य सहयोग दिया है। अतः मैं उनके प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूँ। शिक्षा जीवन में मुझे गुरुजनों की प्रेरणा मिलती रही है। इनमें प्रमुख रूप से आदरणीय प्रा. सदामते (पलुस), प्रा. श्रीमती चव्हाण (पलुस), डॉ. के. पी. शहा (कोल्हापुर), डॉ. रामजी तिवारी (मुंबई), डॉ. उमाशंकर उपाध्याय (पुणे), डॉ. केशव प्रथमवीर (पुणे), डॉ. रोहिताश्व (गोवा) आदि गुरुजनों के प्रति मैं अतीव कृतज्ञ हूँ।

इस समय अपने माताजी और पिताजी के प्रति शब्दों द्वारा आभार व्यक्त करना महज शब्दों का खेल लगता है। जिन्होंने जिंदगीभर अनेक कष्ट और यातनाएँ सहते हुए मेरी शिक्षा की कश्ती को भरे बवंड़र में भी सहारा दिया है, उनके प्रति लाख कृतज्ञता ज्ञापित करने पर भी मैं उनके ऋण से कैसे मुक्त हो पाऊँगा ? माता और पिताजी के साथ-साथ परिवार की जिम्मेदारी निभानेवाले और बुद्धिमान होकर भी आर्थिक विपन्नता के कारण उच्च शिक्षा से वंचित बड़े भाई श्री संजय मरळे के आशीर्वचन और प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। माता-पिता की तरह मुझे आर्थिक तथा मानसिक आधार देनेवाले मेरे मामाजी हनमंत काळे, काकाजी राजाराम मरळे, कृष्णा मरळे तथा उनके परिवार की प्रेरणा मैं भूल नहीं सकता।

शुभाकांक्षी तथा प्रेरक आदर्श मित्र डॉ. साताप्पा चव्हाण, डॉ. हनुमंत शेवाळे, भाऊसाहेब नवले, बाळासाहेब कामन्ना, पंडित बन्ने, संदीप किर्दत, संतोष पवार, गोरखनाथ किर्दत, रवि पाटील, दयानंद पाटील, दयानंद रांजणे, शौकत आतार, दत्तात्रय पाटील, अरविंद जाधव, सुभाष भालेकर, संजय गोखले, स्नेहल गर्जेपाटील, महादेवी शुंगारे, बेबी खिलारे, शोभा जाधव, रेज्युला के. (केरळ), निशा काळे तथा सभी परिचितों का इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः इन सब के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पलुस और जयकर ग्रंथालय, पुणे से हुई। अतः इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारियों का और हिंदी विभाग के बाबू अनिल साळोखे और कांबळे मामा, पोवार मामा का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। मेरे जैसे अभावों और परेशानियों से घिरे शोधार्थियों के लिए संबल सिद्ध हुआ डॉ. आप्पासाहेब पवार विद्यार्थी भवन (कमाओ और पढ़ो योजना) जिसमें मैंने शिक्षा पूर्ण की, मैं आजन्म भूल नहीं सकता। विद्यार्थी भवन के अधिक्षक डॉ. डी. टी. शिर्के, डॉ. एम्. ए. अनुसे, डॉ. विजय ककडे तथा बाबू अभिजित लिंग्रज और शिवाजी मामा तथा सभी साथियों का सहयोग अविस्मरणीय रहा है। अतः मैं इन सबका ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यशोचित रूप में टंकण करनेवाले अल्ताफ मोमीन का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञान-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं उन सब के प्रति आभार प्रकट कर मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. अशोक मोहन मरळे)

स्थान :- कोल्हापुर.

तिथि :- 24 MAR 2004